नईदुनिया

व्हाइट हाउस में रखा एयर फोर्स वन का माडल बना आकर्षण का केंद्र

ट्रंप की शैली और प्राथमिकताओं का प्रतीक

वाशिंगटन

व्हाइट हाउस के ओवल आफिस में होने वाली उच्चस्तरीय बैठकों के दौरान एक छोटा विमान माडल अक्सर लोगों का ध्यान अपनी ओर खींचता है। यह दिखने में भले ही एक सजावटी वस्तु जैसा लगे, लेकिन इसे अमेरिकी राष्ट्रपति के विशेष विमान एयर फोर्स वन के नए प्रस्तावित डिजाइन का माडल माना जाता है। यह माडल हाल के वर्षों में राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की कार्यशैली, उनकी प्राथमिकताओं और सार्वजनिक प्रस्तुति का एक प्रमुख प्रतीक बनकर उभरा है।

विदेशी राष्ट्राध्यक्षों और शीर्ष नेताओं के साथ होने वाली बैठकों की तस्वीरों में यह माडल अक्सर राष्ट्रपति की मेज पर प्रमुख स्थान पर दिखाई देता है। माना जाता है कि इसे जानबूझकर ऐसी जगह रखा जाता है, जहां कैमरों की नजर सबसे पहले पहुंचे। व्हाइट हाउस में आयोजित कई आधिकारिक मुलाकातों की तस्वीरों और वीडियो में यह माडल लगातार दिखाई देता रहा है, जिससे इसकी प्रतीकात्मक अहमियत और बढ़ गई है।

यह माडल उस नए एयर फोर्स वन विमान की अवधारणा को दर्शाता है, जिसके बाहरी रंग और डिजाइन को लेकर लंबे समय से चर्चा होती रही है। ट्रंप ने पारंपरिक हल्के नीले और सफेद रंग की जगह गहरे लाल, सफेद और नीले रंग का संयोजन प्रस्तावित किया था। इस बदलाव को लेकर अमेरिका में राजनीतिक और प्रशासनिक स्तर पर बहस भी हुई थी। समर्थकों ने इसे आधुनिक और प्रभावशाली डिजाइन बताया, जबकि आलोचकों ने इसे दशकों पुरानी परंपरा से अलग कदम माना।

राजनीतिक विश्लेषकों का मानना है कि यह माडल केवल विमान का लघु रूप नहीं, बल्कि ट्रंप की ब्रांडिंग रणनीति का भी हिस्सा है। उनका मानना है कि ट्रंप सार्वजनिक मंचों पर प्रतीकों और दृश्य प्रस्तुति का प्रभावी ढंग से उपयोग करते हैं। ओवल आफिस में आने वाले विदेशी नेताओं के साथ होने वाली तस्वीरों में इस माडल की मौजूदगी भी इसी रणनीति का हिस्सा मानी जाती है। एयर फोर्स वन के नए बेड़े को लेकर ट्रंप प्रशासन के दौरान विमान निर्माता कंपनी के साथ लागत और अनुबंध को लेकर भी व्यापक चर्चा हुई थी। ट्रंप का दावा रहा कि उन्होंने बातचीत के जरिए परियोजना की लागत कम कराई और सरकारी खर्च में बचत सुनिश्चित की। माना जाता है कि विमान का यह माडल उसी पहल और उसके संदेश को भी प्रदर्शित करता है। हाल ही में व्हाइट हाउस के एक वीडियो टूर में ओवल आफिस के भीतर रखे कई विमान माडलों की झलक भी सामने आई। इनमें अमेरिकी नौसेना की प्रसिद्ध एरोबैटिक टीम ब्लू एंजल्स के लड़ाकू विमान का माडल, एफ-35 स्टील्थ फाइटर का माडल और अन्य आधुनिक विमानों की प्रतिकृतियां शामिल थीं। इसके अलावा कार्यालय में आधुनिक विमानन तकनीक से जुड़े अन्य माडल भी प्रदर्शित किए गए हैं, जो अमेरिकी रक्षा और एयरोस्पेस क्षेत्र की क्षमताओं को दर्शाते हैं।

न्यूज ब्रीफ

बॉस को दान कर दी किडनी फिर भी कर्मचारी की चली गई नौकरी, मामला अदालत तक पहुंचा और गोपनीय समझौते के साथ हुआ समाप्त

वाशिंगटन। अमेरिका की एक महिला कर्मचारी का वर्षों पुराना मामला एक बार फिर सोशल मीडिया पर चर्चा का विषय बना हुआ है। यह मामला डेबी स्टीवंस नामक कर्मचारी का है, जिन्होंने अपनी वरिष्ठ अधिकारी (बॉस) की मदद के लिए किडनी दान की थी। हालांकि, किडनी दान के कुछ महीनों बाद ही उन्हें नौकरी से निकाल दिया गया। कर्मचारी का आरोप था कि स्वास्थ्य कारणों से छुट्टियां लेने के चलते उनके साथ भेदभाव किया गया। मामला अदालत तक पहुंचा और बाद में दोनों पक्षों के बीच गोपनीय समझौते के साथ समाप्त हुआ। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, डेबी स्टीवंस की किडनी उनकी बॉस से सीधे मेल नहीं खा रही थी। इसके बावजूद उन्होंने पेयर्ड किडनी एक्सचेंज प्रोग्राम में भाग लिया। इस व्यवस्था में दाता अपनी किडनी किसी अन्य उपयुक्त मरीज को दान करता है, जबकि उसके बदले संबंधित मरीज को किसी दूसरे दाता से अनुकूल किडनी मिल जाती है। इस प्रक्रिया के माध्यम से उनकी बॉस का प्रत्यारोपण संभव हो सका। किडनी दान के बाद डेबी को स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा, जिसके कारण उन्हें उपचार और रिकवरी के लिए कई बार छुट्टी लेनी पड़ी।

पीओके में जनरल डायर की तरह फायरिंग कर रहा पाकिस्तान, परिवार को लाश तक नहीं दी जा रही

रावलाकोट। पाकिस्तान के कब्जे वाले कश्मीर (पीओके) में पिछले आठ सप्ताह से जारी आंदोलन के बीच हालात लगातार तनावपूर्ण बने हुए हैं। रावलाकोट और मीरपुर समेत कई क्षेत्रों में प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षा बलों पर निहत्थे नागरिकों पर गोलीबारी करने और बल प्रयोग का आरोप लगाया है। स्थानीय लोगों का कहना है कि अधिकारों, सुशासन और क्षेत्रीय संसाधनों पर स्थानीय लोगों के अधिकार की मांग को लेकर 50 दिनों से अधिक समय से विरोध प्रदर्शन जारी है। पिछले तीन दिनों में सुरक्षा बलों की तैनाती बढ़ने और कई स्थानों पर झड़पों के बाद स्थिति और गंभीर हो गई है। पाकिस्तान सेना मरने वालों की लाश भी उनके परिजनों को नहीं दे रही। प्रदर्शनकारियों का दावा है कि भारी सुरक्षा व्यवस्था के बावजूद बड़ी संख्या में लोग रावलाकोट में एकत्र हुए, जहां सुरक्षा बलों ने प्रदर्शनकारियों पर गोलीबारी की। उनका आरोप है कि इस कार्रवाई में हताहतों की संख्या आधिकारिक आंकड़ों से अधिक है। वहीं, मीरपुर में भी प्रदर्शनकारियों ने सुरक्षा बलों की कार्रवाई में एक दर्जन से अधिक लोगों के मारे जाने का दावा किया है। हालांकि इन दावों की स्वतंत्र पुष्टि नहीं हो सकी है और पाकिस्तान की ओर से इस संबंध में कोई आधिकारिक जानकारी जारी नहीं की गई है। आंदोलनकारियों ने मानवाधिकार उल्लंघन के गंभीर आरोप भी लगाए हैं। उनका कहना है कि मृतकों के शव उनके परिजनों को नहीं सौंपे जा रहे और रिश्तेदारों की अनुमति के बिना ही अंतिम संस्कार या दफन की प्रक्रिया पूरी की जा रही है।

लंबे समय से समुद्र में ठहरे जहाजों पर पनप रहे समुद्री जीव

तेहरान। अमेरिका और ईरान के बीच जारी संघर्ष अब लगभग पाँच महीनों से फारस की खाड़ी और स्ट्रेट आफ होर्मुज में तनाव बनाए हुए है। इस संघर्ष के कारण लगभग पंद्रह सौ जहाज फारस की खाड़ी में अटके हुए हैं, जबकि कई सौ अन्य जहाज पास की ओमान की खाड़ी में फंसे हैं। लंबे समय से समुद्र में ठहरे इन जहाजों पर अब समुद्री जीव पनप रहे हैं, और आशंका है कि जंग के रुकने के बाद आवाजाही शुरू होने पर ये जीव दुनिया के कोने-कोने में पहुँच जाएँगे, जिससे एक बड़ा पारिस्थितिक संकट पैदा हो सकता है। एक नई स्टडी के अनुसार, व्यापार फिर से शुरू होने पर इन जहाजों पर पनप रहे जीव दुनिया भर में फैल सकते हैं। यूनिवर्सिटी आफ मैरीलैंड सेंटर फार एनवायर्नमेंटल साइंस और वुड्स होले ओशनोग्राफिक इंस्टीट्यूशन सहित चौबीस समुद्री वैज्ञानिकों की एक अंतरराष्ट्रीय टीम द्वारा तैयार की गई इस स्टडी के अनुसार, लंबे समय तक एक ही जगह लंगर डाले रहने के कारण जहाजों के निचले हिस्से पर एल्गी, बार्नकल, मसेल और बिना रीढ़ वाले इनवर्टिब्रेट जीव समुदाय जमा हो जाते हैं, जिसे बायोफाउलिंग कहते हैं। व्यापार के शुरू होते ही ये जीव पूरी दुनिया में पहुँच सकते हैं।

जार्डन में अमेरिकी बेस पर हमले के बाद ईरान के कई शहरों में भीषण बमबारी

तेहरान/वाशिंगटन

जार्डन में अमेरिकी बेस पर हमला करना ईरान को भारी पड़ गया। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप के आदेश पर अमेरिकी मध्य कमान (सेंटकाम) ने ईरान में हवाई हमला किया है। कई शहरों में भीषण बमबारी की गई है। सेंटकाम ने पुष्टि की कि ईरान ने जार्डन में उसके सैन्य ठिकाने पर बैलिस्टिक मिसाइलें दागी। सभी मिसाइलों को बीच में ही रोककर हमले को नाकाम कर दिया गया।

रिपोर्ट के अनुसार, सेंटकाम ने कहा कि मिसाइलें ईरानी क्षेत्र से दागी गईं। इसे ईरान का पहला सीधा बैलिस्टिक मिसाइल हमला बताया गया है। यह हमला ऐसे समय पर किया गया, जब अमेरिका ने राजनयिक बातचीत के लिए ईरान के खिलाफ हमला रोक दिया था। जार्डन हमले पर अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने कड़ी प्रतिक्रिया दी। उन्हें कहा कि ईरान को इसकी कीमत चुकानी पड़ेगी। ट्रंप ने कहा कि अमेरिकी सैनिकों को निशाना बनाकर किए गए हमले का माकूल जवाब दिया जाएगा।

इससे पहले अमेरिकी और सऊदी सेना ने इराक में सक्रिय ईरान समर्थित मिलिशिया गुटों को निशाना बनाते हुए संयुक्त हवाई हमले किए। इस हमले में पापुलर मोबिलाइजेशन फोर्सेस (पीएमएफ) के कम से कम 20 लड़ाके मारे गए। यह संयुक्त सैन्य कार्रवाई तब हुई जब सऊदी अरब ने कहा कि वायु रक्षा प्रणाली ने देश के पूर्वी प्रांत में मौजूद तेल ठिकानों की ओर भेजे गए कई ड्रोन को सफलतापूर्वक मार गिराया। सऊदी अरब ने इन हमलों की कोशिश के लिए इराक में मौजूद ईरान-समर्थित सशस्त्र समूहों को जिम्मेदार ठहराया।

यह सैन्य हमले राष्ट्रपति ट्रंप की व्हाइट हाउस में इजराइल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू के साथ द्विपक्षीय बैठक के ठीक बाद शुरू हुए हैं। दोनों नेताओं के बीच चर्चा मुख्य रूप से ईरान से संबंधित क्षेत्रीय रणनीति पर केंद्रित रही। इस बीच एक ब्रिटिश समुद्री सुरक्षा फर्म ने कहा कि मिस्र के एक बंदरगाह पर ड्रोन हमलों से प्राकृतिक गैस ले जा रहे दो जहाजों में आग लग गई। अमेरिका ने हमले शुरू करने के साथ ईरान के खिलाफ कड़े प्रतिबंधों की घोषणा की है। स्टेट डिपार्टमेंट ने आठ ऐसी संस्थाओं पर नए प्रतिबंधों की घोषणा की, जिन पर होर्मुज जलडमरूमध्य से गुजरने वाले जहाजों से शुल्क वसूलने की योजना में शामिल होने का आरोप है। अमेरिकी हमलों के बाद केशम द्वीप, किश, बंदर अब्बास, अबादान और बुशहर में धमाकों की आवाज सुनी गई। ईरानी मीडिया का कहना है कि इराक में संयुक्त अमेरिकी-सऊदी हमलों में चार ईरानी सलाहकार भी मारे गए। केशम द्वीप पर हमले के बाद कई लोग मलबे के नीचे दब गए। इसकी पुष्टि तस्नीम समाचार एजेंसी ने की है। कई विशेषज्ञों ने कहा कि ईरान के दक्षिण में कई जगहों पर क्रूज मिसाइल से हमला किया गया है। केशम द्वीप में इलेक्ट्रिकल ग्रिड पर मिसाइल हमले के कारण हुई कुछ समय के लिए बिजली आपूर्ति रोक दी गई। तस्नीम के अनुसार,अमेरिकी लड़ाकू विमानों ने केशम द्वीप के ऊपर उड़ान भरी और द्वीप पर कई जगहों पर मिसाइलें दागीं।

ईरान के सरकारी प्रसारक आईआरआईबी की रिपोर्ट के अनुसार, केशम द्वीप में एक रिहायशी इमारत पर अमेरिकी हमले के बाद लोग मलबे में दब गए हैं। होर्मोजगन प्रांत के डिप्टी गवर्नर ने इसकी पुष्टि की है। तस्नीम के अनुसार, फ़ार्स प्रांत में अमेरिकी सेना ने काजेरून शहर के बाहरी इलाके में एक जगह को निशाना बनाया। अमेरिकी सेना ने दक्षिण-पश्चिमी खुजेस्तान प्रांत के अहवाज में कई जगहों पर हमले किए हैं। इससे शहर के कुछ हिस्सों में बिजली गुल हो गई। शहर में कम से कम सात जगहों पर हमले हुए हैं।

परमाणु हथियारों पर जापान में नई बहसः प्रधानमंत्री की चुप्पी और रक्षा मंत्री के बयानों ने बढ़ाई चिंता

टोक्यो

दूसरे विश्व युद्ध में परमाणु बमों का दंश झेल चुके जापान में फिर उसकी परमाणु नीति को लेकर गहन चर्चा शुरू हुई है। इसकी वजह बनी प्रधानमंत्री सनाए ताकाइची का संसद में परमाणु हथियारों को देश में न लाने के नियम पर सीधा जवाब देने से बचना है। उनके इस रुख से जहां विपक्ष ने चिंता जाहिर की है, वहीं देश की तीन दशक पुरानी गैर-परमाणु नीति के भविष्य पर सवाल खड़े हुए हैं।

संसद की बजट समिति की बैठक के दौरान प्रधानमंत्री ताकाइची से स्पष्ट पूछा था कि क्या सरकार भविष्य में भी परमाणु विरोधी रुख पर कायम रहेगी और देश में परमाणु हथियारों को लाने वाली किसी भी नीति का हमेशा विरोध करेगी। इसके जवाब में प्रधानमंत्री ताकाइची ने केवल इतना कहा कि सरकार अभी भी मौजूदा सिद्धांतों का पालन कर रही है, लेकिन भविष्य में इस मुद्दे पर किसी बदलाव की संभावना को लेकर उन्होंने कोई स्पष्टता नहीं दी।

बात दें कि जापान लंबे समय से तीन गैर-परमाणु सिद्धांतों को मानता रहा है, जिसके तहत वह न परमाणु हथियार रखेगा, न बनाएगा और न ही उन्हें अपने देश में तैनात होने देगा। विपक्षी सांसद तोकोमो तमुरा ने सरकार को हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए विनाशकारी परमाणु हमलों की याद दिलाकर जोर दिया कि जापान को परमाणु हथियारों के खिलाफ एक मजबूत रुख अपनाना चाहिए और वैश्विक परमाणु हथियार प्रतिबंध संधि में शामिल होना चाहिए। इस बीच, जापानी रक्षा मंत्री शिंनजीरो कोइजूमी के बयानों ने स्थिति को और जटिल बना दिया है। उन्होंने हाल ही में कहा था कि जापान को परमाणु हथियारों के मुद्दे पर बिना किसी रोक-टोक के खुलकर चर्चा करनी चाहिए और इस बहस के लिए फ्रांस के परमाणु हथियार कार्यक्रम का उदाहरण दिया।

अगस्त में जापान की दूसरे विश्व युद्ध में हार की वर्षगांठ करीब होने के कारण इन बयानों और परमाणु नीति पर उठी यह बहस काफी अहम मानी जा रही है। हालांकि, जापान सरकार ने अभी तक अपनी आधिकारिक परमाणु नीति में किसी बदलाव की घोषणा नहीं की है, लेकिन प्रधानमंत्री और रक्षा मंत्री के हालिया बयानों ने निश्चित रूप से यह सवाल खड़ा कर दिया है कि क्या भविष्य में जापान इस संवेदनशील मुद्दे पर अपनी ऐतिहासिक स्थिति बदल सकता है।

नेपाल में दो भारतीय पर्यटकों से डांस क्लब में मारपीट, आरोपित गिरफ्तार

काठमांडू। नेपाल पुलिस ने दो भारतीय पर्यटकों के साथ राजधानी काठमांडू के एक डांस क्लब में मारपीट और दुर्व्यवहार करने के आरोप में दो नपाली नागरिकों को गिरफ्तार किया है । पुलिस उपाधीक्षक कौशल कुमार बुढाथोकी के अनुसार, काठमांडू के लाजिमपाट स्थित बालीवुड डांस क्लब से कंचनपुर बेलडांडी निवासी महेश रोकाया और नुवाकोट निवासी सुरेंद्र श्रेष्ठ को गिरफ्तार किया गया है। जांच में पाया गया कि डांस क्लब के कर्मचारियों ने भारतीय नागरिकों के साथ मारपीट और दुर्व्यवहार किया। अधिक बिल बनाकर जबरन मोबाइल बैंकिंग के जरिए बिल का भुगतान करवाया । इसके अलावा, आरोपितों ने पुलिस कर्मचारियों के काम में बाधा डाली और उनके साथ हाथापाई भी की।

एआई पावर्ड माइक्रो ड्रोन मच्छरों का करेगा अंत

वाशिंगटन

अमेरिकी स्टार्टअप टार्नयोल ने एक ऐसा क्रांतिकारी एआई पावर्ड माइक्रो ड्रोन विकसित किया है, जो उड़ते हुए मच्छरों को भी मारकर गिरा सकता है। कंपनी का दावा है कि अगर इस तकनीक का इस्तेमाल किया गया तो मच्छर नियंत्रण पर आने वाली लागत को 100 गुना तक कम किया जा सकता है, जो एक कमाल की उपलब्धि होगी। कंपनी के सह-संस्थापक एलेक्स टूसेंट ने 14 जुलाई को एक वीडियो जारी किया, जिसमें उनके ड्रोन ने नियंत्रित परीक्षण क्षेत्र में एक उड़ते हुए पतंगे को सफलतापूर्वक मार गिराया।

हालांकि यह एक पतंगा था और मच्छर नहीं, फिर भी यह परीक्षण कंपनी के लिए एक बहुत बड़ा कदम माना जा रहा है, जो तकनीक की क्षमता को दर्शाता है। टार्नयोल के इन छोटे ड्रोन का वजन मात्र 40 ग्राम है। इनमें स्मार्टफोन माइक्रोफोन, अल्ट्रासोनिक सेंसर्स और एक खास साफ्टवेयर लगाया गया है। ड्रोन अल्ट्रासोनिक पल्स भेजता है और मच्छरों के पंखों से आने वाली विशिष्ट ध्वनि को पहचानकर उन्हें सटीक रूप से लक्षित करता है। यह तकनीक ड्रोन को अन्य कीड़ों से मच्छरों को अलग पहचानने में मदद करती है।

कंपनी के इंजीनियर एलेक्स टूसेंट और क्लोविस पिडालू का लक्ष्य है कि इन ड्रोन के झुंड से पूरे शहरी इलाकों में मच्छरों का सफाया किया जा सके। उनका अनुमान है कि मात्र 10 ड्रोन एक वर्ग किलोमीटर क्षेत्र को मच्छरों से पूरी तरह मुक्त कर सकते हैं। यह एआई ड्रोन तकनीक कई मायनों में पारंपरिक मच्छर नियंत्रण विधियों से बेहतर साबित हो सकती है। अभी तक मच्छर नियंत्रण के लिए केमिकल स्प्रे, मच्छरदानी और महंगे उपकरणों का इस्तेमाल होता रहा है, जो अक्सर पर्यावरण और मानव स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होते हैं। ऐसे में, यह एआई ड्रोन समाधान सस्ता, अत्यधिक लक्षित और पर्यावरण अनुकूल विकल्प हो सकता है। हालांकि यह अभी शुरुआती चरण में है, लेकिन अगर यह तकनीक सफल होती है, तो मलेरिया, डेंगू और चिकनगुनिया जैसी जानलेवा बीमारियों से लड़ने में एक बड़ा और क्रांतिकारी बदलाव आ सकता है। बता दें कि मानसून आते ही मच्छरों का प्रकोप और उनसे होने वाली बीमारियों का खतरा बढ़ जाता है। इस समस्या से निपटने लोग तरह-तरह के उपाय करते हैं।

साल 2050 तक समुद्र में समा जाएंगे कई तटीय शहरः नासा

वाशिंगटन

अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने चेतावनी दी है कि जलवायु परिवर्तन तेजी से तबाही मचा रहा है और 2050 तक दुनिया के कई तटीय शहर समुद्र में समा सकते हैं। अगले 26 सालों में समुद्र का स्तर कम से कम 1 फुट (लगभग 30 सेंटीमीटर) तक बढ़ सकता है। कुछ इलाकों में तो यह बढ़ोतरी और भी ज्यादा भयानक होगी, जिससे तूफान, बाढ़ और हाई टाइड्स का भयानक जंजाल उठेगा और कई शहरों के नामोनिशान मिटने का खतरा मंडरा रहा है।

नासा के दशकों पुराने सैटेलाइट डेटा और तटीय गेज रिकार्ड्स के विश्लेषण से पता चला है कि गल्फ कोस्ट पर इसका सबसे ज्यादा असर होने वाला है, जहां समुद्र का स्तर 14 से 18 इंच तक बढ़ सकता है।

न्यू आरलियंस, ह्यूस्टन, टाम्पा और मोबाइल जैसे शहर पहले से ही बाढ़ की चपेट में हैं, और महज 24 साल बाद इनकी सड़कें, घर और बंदरगाह हमेशा पानी में ही डूबे नजर आएंगे। दक्षिण-पश्चिमी अमेरिका में भी औसतन 12 इंच का उछाल आने वाला है, जिससे फ्लोरिडा, जार्जिया और साउथ कैरोलाइना के तटीय इलाके बुरी तरह प्रभावित होकर पानी-पानी हो जाएंगे।

उत्तरी कोस्ट पर नारफोक जैसे शहरों में 10-14 इंच का स्तर बढ़ सकता है, जबकि न्यूयार्क, बोस्टन और मियामी जो पहले से ही हाई टाइड फ्लडिंग से जूझ रहे हैं, उनके लिए 2050 तक स्थिति और खतरनाक हो जाएगी। वेस्ट कोस्ट पर जलस्तर फिर भी कम बढ़ेगा और 4-8 इंच तक रहेगा, लेकिन लास एंजेलिस, सैन फ्रांसिस्को और सिएटल जैसे शहरों पर भी इसका असर पड़ेगा। इस संकट को और गहरा करने में चंद्रमा की भूमिका भी बढ़ेगी।

2030 के कुछ महीने बीतने के बाद चंद्रमा की कक्षा में एक खास वाबल (डगमगाहट) आएगा, जो हर 18 साल में होता है। खास बात यह होगी कि इस बार यह उच्च ज्वार के साथ आएगा और समुद्र के बढ़े स्तर की वजह से छोटी-छोटी बाढ़ों को भयंकर रूप दे देगा, जिससे सड़कें, घर, एयरपोर्ट और मेट्रो पानी में डूबे रहेंगे।

नासा के सैटेलाइट सेंटिनेल-6 और मशेल फ्रीलिच पिछले 30 साल से समुद्र की ऊंचाई नाप रहे हैं, और उनके डेटा ने पहले ही पुष्टि कर दी है कि समुद्र का स्तर लगातार बढ़ रहा है। इसकी मुख्य वजह ग्लोबल वार्मिंग, ग्लेशियरों का पिघलना और महासागरों का गर्म होकर फैलना है। ऐसे में वैज्ञानिक चेतावनी दे रहे हैं कि अगर ग्रीनहाउस गैसों का उत्सर्जन नहीं रोका गया तो 2050 के बाद स्थिति और भयावह हो जाएगी। तटीय इलाकों की बर्बादी लाखों लोगों का विस्थापन और अरबों डालर का नुकसान लेकर आएगी, और बुनियादी ढांचा पूरी तरह ध्वस्त हो जाएगा।